अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अक्टूबर-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका
अजायब ✲ बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–छठा	अक्टूबर–2025

3 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
मीठे ठग

15 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
आत्मा मैली है

25 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश
लाट–साहब

31 परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारबिंद से
भजन–अभ्यास

32 सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 283 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

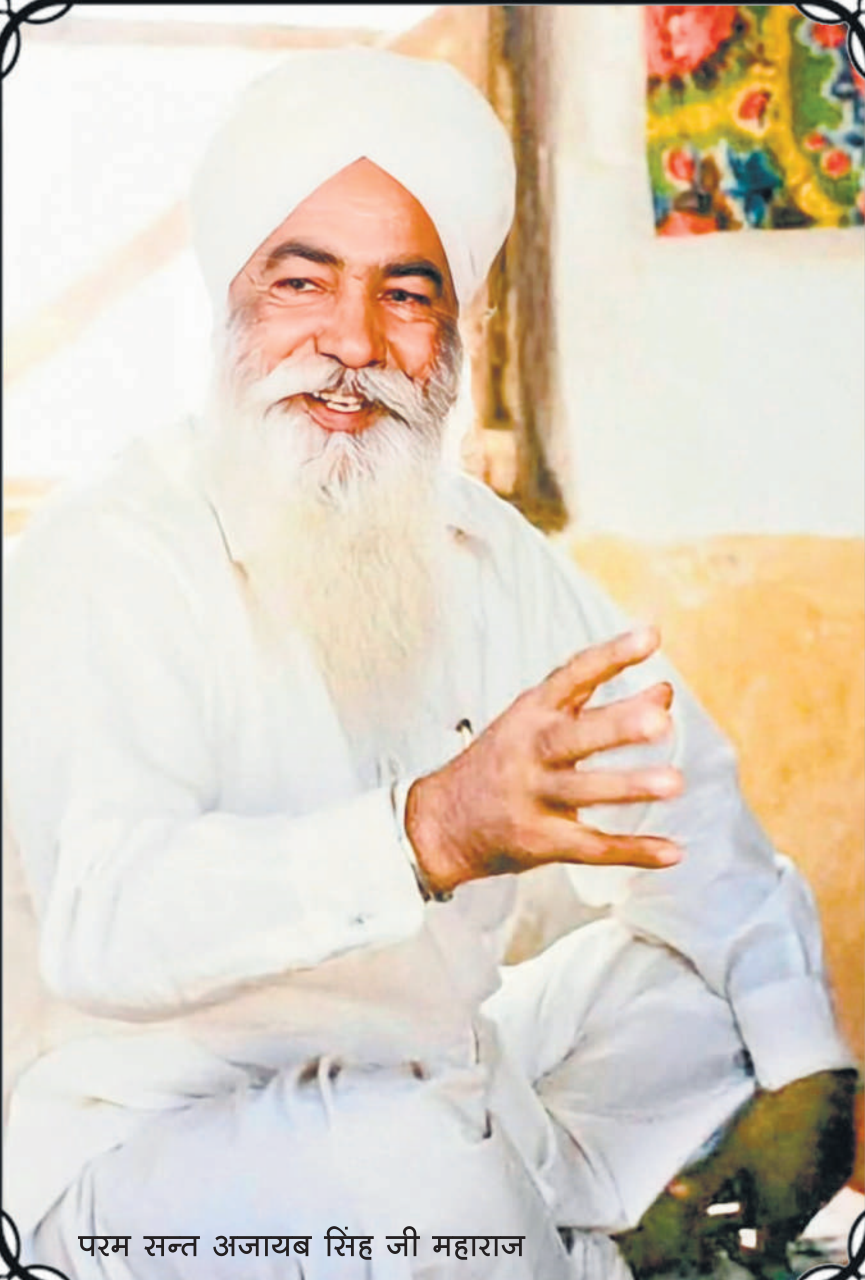

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मीठे ठग

DVD-514(2)

30 दिसम्बर 1983 हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी 16 पी.एस., राजस्थान

मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में। पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में।।
चेत कर प्रीत करो सतसंग में। गुरु फिर रंग दें नाम अरँग में।।

हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है, आत्माएं परमात्मा से बिछुड़कर काल के देश में आईं। काल ने सतपुरुष की बहुत भक्ति की, सतपुरुष ने खुश होकर आत्माएं काल को सौंप दी। जब आत्माएं परमात्मा से बिछुड़ने लगी तब परमात्मा ने कहा, ''मैं काल की सेवा के वश होकर आपको इसके साथ भेज रहा हूँ।'' आत्माओं ने कहा कि आप हमें इसके साथ भेज रहे हैं अगर यह हमें कष्ट देगा तो हमारी मदद कौन करेगा?

आप सबने अनुराग सागर* पढ़ा होगा, इसे इंगलिश में छपे हुए काफी समय हो गया है। उस समय सतपुरुष ने आत्माओं के साथ वादा किया कि मैं काल की सेवा से खुश होकर आपको इसके सुपुर्द कर रहा हूँ। यह चौरासी लाख योनियों के बाद एक बार आपको इंसानी जामा जरूर देगा और उस इंसानी जामें का मकसद सिर्फ मुझसे मिलने का ही होगा। जिन आत्माओं के दिल के अंदर मुझसे मिलने की विरह, तड़प और प्यार होगा तब मैं भी इंसानी जामें में आकर विरह-तड़प वाली आत्माओं की बाँह पकड़कर उन्हें अपने साथ अपने देश ले आऊँगा।

किसी राजा की लड़की ने राजकुमार के साथ शादी करवाकर महारानी बनना था, महलों में रहना था लेकिन उसने अपने राजघराने को छोड़कर भंगी के साथ शादी कर ली। महलों में जाने की बजाय इसे सड़कों पर झाड़ू लगाना पड़ा इसी तरह यह आत्मा सतपुरुष की अंश है, इसका मकसद किसी सन्त-महात्मा के पास जाकर 'नाम' प्राप्त करना था। अपने महल

*प्यार का सागर

अपने पिता के पास वापिस जाकर सतपुरुष की पुत्री कहलवाना था। हमारा मन भंगी है, इसने मन के साथ प्यार लगा लिया, यह अपने घर को भूल गई। मन ने इसे फँसाया हुआ है कि यह तेरी माता है, यह तेरा पिता है, यह तेरी बहन है, यह तेरा भाई है और यह तेरा मुल्क है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तू ठंडे दिल से सोचकर देख, मौत आने पर तेरे संबंधी मित्र, औरत या पति कोई तेरी मदद करेगा? ये सारे **मीठे ठग** हैं, सब अपनी–अपनी गरज से प्यार करते हैं। जब किसी की गरज पूरी हो जाती है फिर कौन किसको पूछता है? पहले तो हम जीते जी ही एक–दूसरे को त्याग देते हैं। मौत के बाद हम यही कहते हैं कि अब इसके साथ हमारा क्या रिश्ता है? दिन में ही इसका अंतिम संस्कार करें।'' आप रोज ही ब्रह्मानंद महात्मा का भजन पढ़ते है:

गुरु बिन कौन सहाई नरक में, गुरु बिन कौन सहाई रे।
मात पिता सुत बंधप नारी, स्वार्थ के सब भाई रे।।

मियाँ–बीवी का रिश्ता सारी जिंदगी इकट्ठे रहने का होता है। कबीर साहब कहते हैं:

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी।।
जब ही हंस तजी इह काँइआ प्रेत प्रेत करि भागी।।

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि सतगुरु के बिना धर्मराज की कचहरी में कोई आपका साथी नहीं, सतगुरु के बिना कोई आपको छुड़वा नहीं सकता। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप इन **मीठे ठगों** से तभी छुटकारा पा सकते हैं जब आप सतसंग में जाना शुरू कर देंगे। जब आप सतसंग पर अमल करेंगे तो आपके अंदर विरह और तड़प पैदा होगी। सतगुरु आपको निर्मल रंग में रंग देते हैं और 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ देते हैं।''

सतसंग में जाने का मतलब यह नहीं कि आप पारिवारिक जिम्मेदारियां छोड़ दें। सन्त इन्हें **मीठे ठग** इसलिए कहते हैं क्योंकि ये लोग मतलब के

है। आपको समाज में जन्म मिला है, आपके माता–पिता, बहन–भाई भी हैं लेकिन आप इनकी असलियत समझें। अगर आपको सेवा के लिए सामग्री मिली है तो उससे सेवा का काम लें न कि इन पदार्थों के सेवक बन जाएं।

सुपुच आने–जाने वाले राहगीरों को लूट लेता था, उन्हें मार देता था। एक बार कबीर साहब उस रास्ते से गुजर रहे थे तो सुपुच ने कबीर साहब से कहा, ''तुम्हारे पास जो कुछ है उसे रख दो।'' कबीर साहब ने सुपुच से कहा, ''तू विश्वास रख, मैं कहीं नहीं जाऊंगा, इसी जगह बैठा रहूँगा। तू जिनके लिए ये चोरियां और कत्ल करता है उनसे पूछकर आ, क्या वे तेरा पाप उठाएंगे?'' सुपुच ने घर जाकर अपने परिवार के लोगों से पूछा कि मैं जो गुनाह करता हूँ क्या उसमें आप मेरा पाप बँटाएंगे? परिवार के लोगों ने कहा कि हम तेरा पाप क्यों बँटाएंगे? हमें तू चाहे कहीं से भी लाकर दे। सुपुच ने कबीर साहब के सामने आकर सिर झुका दिया और कहा कि उनमें से कोई भी तैयार नहीं, आप मुझे इस अपराध से बचाएं। सन्तों की दया–दृष्टि होती है। जब सुपुच ने नम्र होकर 'शब्द–नाम' माँगा तो कबीर साहब ने उसे 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ दिया।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''ऐसा नहीं कि हमारे पास पुन्नी ही आएं पापी न आएं। जब नाम ले लिया तो जहाँ खड़े हैं वहीं रूक जाएं।'' जो कुछ पहले किया है, सन्त मालिक के प्यारे उसे बख्श देते हैं, आगे के लिए रास्ते पर डाल देते हैं कि आगे कोई पाप या ऐब न करें। अगर हम नाम लेकर ऐब–पाप करते हैं तो हम गुरु के साथ विश्वासघात कर रहे होते हैं। राम हत्यारा तो बख्शा जाता है लेकिन गुरु हत्यारा कभी नहीं बख्शा जाता। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा हरि के रूठते गुरु की शरणी जाए।
कहे कबीर गुरु रूठते हरि न होए सहाए।

मन मेरा पंखी भया उड़कर चढ़या आकाश।
स्वर्ग लोक खाली पड़या साहब संतन पास।

सन्तों की दया दृष्टि होती है आगे हमारे बर्तन का सवाल है। जिस ताकत ने हमारे पाप माफ करने हैं, भूल बख्शवानी है और परमात्मा के साथ मिलवाना है, वह ताकत सन्तों के अंदर प्रकट होती है। सन्तों ने अपने गुरु की दया से और अपनी मेहनत से उस ताकत को हासिल किया होता है। वह ताकत कण–कण में व्यापक है, गुरु ने उस ताकत को अपने ऊपर मेहरबान किया होता है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप अपने ख्याल को परिवार, समाजों में से निकालकर सतसंग में जाएं, सतसंग पर अमल करें।'' आप सतसंग में जो सुनते हैं उसे अपने ऊपर ढ़ालें। जब सतसंग ही हमारा सब कुछ बन जाता है तो सन्त–महात्मा हमें निर्मल रंग में रंग देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''तराजु का जो पलड़ा भारी होगा वह नीचे बैठ जाएगा और हल्का पलड़ा ऊपर आ जाएगा। जिस तरफ हमारा प्यार है अंत समय हमें वही ख्याल आएंगे अगर सन्तों के साथ प्यार है तो हम सन्तों को याद करेंगे। सन्त हमें परमात्मा के पास ले जाएंगे अगर दुनिया के साथ प्यार है तो उस समय दुनिया ही याद आएगी।''

मेरा एक दोस्त है, तकरीबन पच्चीस साल से हमारी दोस्ती और प्यार है। मैं आमतौर पर उसे समझाता रहा हूँ कि परिवार के मोह में ज्यादा नहीं फँसना चाहिए लेकिन वह हमेशा ही बच्चों की माला फेरता है। मैं पिछले साल मुम्बई गया हुआ था, वह थोड़ा सा बीमार हुआ कोई खास तकलीफ नहीं थी। वह कहने लगा कि लड़कों को बुलाओ। जब मैं मुम्बई से वापिस आया तो मैंने यह बात सुनी। मैंने हँसकर उससे कहा, ''अफसोस की बात है! मैं तुझसे जितना प्यार करता हूँ उतना प्यार तो तेरे सारे लड़के भी तुझसे नहीं करते लेकिन मैं तुझे बिल्कुल भी याद नहीं आया। मैं हमेशा तुझसे कहता रहा हूँ कि आखिरी वक्त यह ख्याल तुझे तंग करेगा।''

अब वह पछताता है कि मैंने गलती की अब ऐसा नहीं करूंगा। मैंने कहा कि मौत तुझे यह नहीं कहेगी कि लड़को को बुला ले। जब मौत आती है तो किसी को बुलाने या बात करने का मौका भी नहीं देती।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आपसे और कुछ नहीं होता तो आप सन्तों के साथ प्यार ही कर लें अगर आप सन्तों से प्यार करेंगे तो आप सन्तों के पास ही जाएंगे। सन्तों का प्यार परमात्मा के साथ है, आप ओटोमेटिक ही परमात्मा में जाकर समा जाएंगे।''

मैं आपको भरोसे की बात बताया करता हूँ, यह बात मैंने पहले भी सतसंग में बताई है। यह घटना गांव 24 पी.एस. की है, वहाँ एक बुजुर्ग माता को महाराज सावन सिंह जी से 'नाम' मिला हुआ था। उस परिवार में कोई सतसंगी नहीं था, सब मीट–शराब खाते–पीते थे। उस माता को जितना भी समय मिलता वह भजन–अभ्यास करती। जब उस माता का अंत समय आया तो उसके लड़के ने कहा, ''लड़कियों को बुला लिया जाए?'' माता ने कहा, ''मेरा गुरु सफेद कपड़े पहने हुए मेरे पास खड़ा है, मैंने किसी लड़की से नहीं मिलना।''

इस बात का उस परिवार पर इतना असर हुआ कि माता के जाने के बाद सारे परिवार ने 'नाम' लिया और मीट–शराब छोड़ दिया। भरोसे वाला सतसंगी अपने परिवार को भी तार देता है बेशक उस माता के रहते हुए उस परिवार ने 'नाम' नहीं लिया था लेकिन उस बुजुर्ग माता की मौत ने ऐसा करिश्मा दिखाया कि सारा परिवार ही सन्तमत में आ गया। ये दोनों कहानियां मेरे व्यक्तिगत तजुर्बे की हैं।

धन सम्पत तेरे काम न आवे। छोड़ चलो यह छिन में।।
आगे रैन अंधेरी भारी। काज करो कुछ दिन में।।

स्वामी जी महाराज माया के सेवकों के लिए कहते हैं, ''आप जो धन–दौलत इकट्ठा कर रहे हैं, यह धन दुनिया का कारोबार चलाने के लिए बनाया जाता है लेकिन हम उस धन के ऊपर बैठ जाते हैं। चाहे कोई भूखा रहे लेकिन हम चाहते हैं कि सारी दुनिया का धन मेरे पास ही आ जाए।''

तू सोचकर देख, तेरा कोई मित्र नहीं है। गुरु के 'नाम' के बिना कोई भी तेरे काम नहीं आएगा। इसमें से जो धन तू परमार्थ में खर्च कर लेगा वही तेरा है बाकी तूने यहीं छोड़कर चले जाना है। कबीर साहब कहते हैं:

माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ।।
इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ।।

यह देही फिर हाथ न आवे। फिरो चौरासी बन में।।
गुरु सेवा कर गुरु रिझाओ। आओ तुम इस ढ़ग में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा ने हमें इंसान का जामा एक मौका बख्शा है, इस जामें को सारी योनियों का सरदार बनाकर भेजा है। बड़े आदमी की बड़ी जिम्मेदारियां होती हैं, परमात्मा ने हमें अमोलक इंसानी जामा दिया है। हमें इस जामें की जिम्मेदारियों को भी समझना है। हमने इस जामें में बैठकर वह काम करना है जो हम चौरासी लाख योनियों पशु-पक्षियों के जामें में नहीं कर सकते। अगर हमने इस जामें को शराबों-कबाबों और विषय-विकारों में खो दिया तो आगे फिर चौरासी तैयार है, यह जीवन तो क्षण भंगुर है।

इंसानी जामें का फायदा हम एक ही तरीके से उठा सकते हैं कि गुरु हमें जो बताते हैं हमने उस रास्ते पर चलना है। भजन-सिमरन करके गुरु को अपने ऊपर खुश करना ही सबसे बड़ी चीज है। हम इस ढ़ग को अपनाकर गुरु को अपने ऊपर मेहरबान कर सकते हैं।

सज्जनों, गुरु सदा हमारे ऊपर मेहरबान होते हैं, वह तो हमेशा दया करना ही जानते हैं। जिस तरह दुनियावी पिता अपने बच्चों को प्यार करता है, उनकी बेहतरी सोचता है, उनके लिए हर कुर्बानी करने को तैयार रहता है अगर बच्चा गलत रास्ते पर चला जाए तो पिता को कितना दुःख होता है, पिता बच्चे को हर तरीके से समझाता है अगर बच्चा न समझे तो पिता अदालत में जाकर बच्चे को बेदावा भी कर देता है लेकिन सन्त कभी भी बेदावा नहीं करते। सन्त कभी भी सब्र को अपने हाथ से नहीं जाने देते, हमेशा दया करते हैं। सन्त सतसंग के जरिए अपने बच्चों को प्यार से समझाते हैं कि बेटा तुमने यह काम करना है और यह काम नहीं करना।

लुकमान पैगम्बर का लड़का बुरी संगत में पड़ गया। पैगम्बर साहब ने कहा, ''देख बेटा, अमुक लड़के की संगत नहीं करनी, वह शरारती है तेरे

मन में भी शरारतें करने की आदत पैदा हो जाएगी।'' उस लड़के ने पैगम्बर साहब से कहा, ''मैं बहुत होशियार हूँ, मैं कभी भी उसके कहने से बुरा कर्म नहीं करूंगा।'' पैगम्बर साहब का व्यक्तिगत तजुर्बा था कि बुरी संगत आखिर बुरा असर दे ही देती है।

पैगम्बर साहब ने एक कोयला उठाकर कहा, ''बेटा, यह कोयला हाथ में पकड़ ले लेकिन जरा यह ख्याल रखना कि हाथ काला न हो जाए।'' वह लड़का अपने आप ही कहने लगा, ''पिता जी, जब मैं इस कोयले को हाथ में पकड़ूंगा तो यह कैसे हो सकता है कि हाथ काला न हो?'' पैगम्बर साहब ने कहा, ''जब कोयला हाथ में पकड़ने से हाथ काला हुए बिना नहीं रह सकता तो यह कैसे हो सकता है कि तू बुरे लड़के की संगत में जाकर शरीफ रह जाए?''

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप गुरु का दिया हुआ भजन-सिमरन करें तभी आप पापों-ऐबों से बच सकते हैं अगर हम मन की सोहबत में रहेंगे तो पता नहीं यह कब हमें धोखा दे जाए। सबसे ज्यादा धोखेबाज हमारा दुश्मन हमारे अंदर है, इसने बाहर से नहीं आना अंदर से ही हमें धोखा दे देना है।''

गुरु बिन तेरा और न कोई। धार बचन यह मन में।।
जगत जाल में फँसो न भाई। निस दिन रहो भजन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''इस जगत में गुरु के बिना कोई तेरा मित्र नहीं, कोई तेरा हमदर्द नहीं। यह सारी दुनिया गरजों से बंधी हुई है, गुरु का प्यार बेगरज है। दिन-रात, सोते-जागते गुरु के दिए हुए 'शब्द-नाम' के साथ जुड़े रहें।''

साध गुरु का कहना मानो। रहो उदास जगत में।।
छल बल छोड़ो और चतुराई। क्यों तुम पड़ो कुगति में।।

सन्त–महात्माओं का कहना मानें, वे जो कहते हैं आप उस पर अमल करें, वे आपके फायदे के लिए ही मुँह से वचन निकालते हैं। आप मन के फरेबों से बचें, गुरु से छल न करें। गुरु आपके अंदर 'शब्द–रूप' होकर बैठे हैं, गुरु आपकी हर हरकत को देख रहे हैं।

अफसोस! पहले मन कहता है कि भोग भोग ले, फिर कहता है शराब पी ले, ये सब कुछ करके हम कहते हैं कि हमें माफी दे दें। सन्त कहते हैं कि भजन करो लेकिन हम फिर भी भजन नहीं करते, मन हमारे साथ छल करता है। सोचकर देखें, आपके गुरु कहाँ है? जब आप कोई हरकत करते हैं तो वे आपको देख रहे होते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि गुरु दयालु पुरुष होते हैं, वे कभी भी दया का अंग नहीं छोड़ते उनके पास माफी है, वे जीवों को माफी देने के लिए ही आते हैं। गुरु कई बार हमारी बुरी हरकतें देखते हैं लेकिन वे बड़े सब्र वाले और पर्दापोश होते हैं, हम फिर भी उनके पास जाकर सच्चे–सुच्चे इंसान बनकर बैठ जाते हैं। वे कहते हैं कि यह आज नहीं समझा फिर समझ जाएगा। गुरु कई बार कह भी देते हैं कि तू बहुत अच्छा है, आप यह न समझें कि उन्हें पता नहीं।

सज्जनों, आप सोचते बाद में हैं वह पहले हमारी आवाज सुन लेते हैं, वह तो आपके नजदीक से नजदीक हैं। जिन्होंने इस मत को समझ लिया है जो सच्चखंड पहुँच जाते हैं वे सन्तों के कहने के मुताबिक अपना जीवन ढ़ाल लेते हैं। वे आज तक गुरुमत को झुठला नहीं सके, उन लोगों ने अंदर जाकर गवाही दी कि सच अंदर है। कबीर साहब कहते हैं:

जो गुरु बसै बनारसी शिष्य समुन्दर धीर।।
एक पलक बिसरे नहीं जो गुण होए शरीर।।

सुमिरन करो गुरु को सेवो। चल रहो आज गगन में।।
कल की खबर काल फिर लेगा। वहाँ तुम जलो अगिन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सन्त आपको जो सिमरन देते हैं आप ईमानदारी और पवित्र ख्यालों से सिमरन करें। सिमरन के जरिए ही हम फैले हुए ख्यालों को तीसरे तिल पर एकाग्र कर सकते हैं। तीसरे तिल से हमारा खास सम्बंध है क्योंकि हमारे सफर की शुरूआत तीसरे तिल से ही होती है अगर हम सही ढंग से सिमरन करें और हमारे सिमरन का कोर्स पूरा हो जाए तो जो 'शब्द' हमारे अंदर आ रहा है वह फौरन ऊपर खींच लेगा। आत्मा एक मंडल से दूसरे मंडल को 'शब्द' के जरिए ही पार करती है। हमें 'शब्द' सुनाई तो देता है लेकिन सिमरन कम होने की वजह से ख्याल इकट्ठा नहीं होता तो 'शब्द' हमें ऊपर नहीं खींचता।''

जब तक लोहा चुम्बक के दायरे में नहीं आता तब तक चुम्बक लोहे को कैसे खींच सकता है? इसी तरह हमने आत्मा को 'शब्द' के दायरे में लेकर जाना है ताकि 'शब्द' आत्मा को ऊपर खींच ले।

अबही समझ देर मत करियो। न जानूं क्या होए इस पन में।
यों समझाय कहें राधास्वामी। मानों एक बचन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''देर न करें, आज का काम कल पर न छोड़ें। जो मन आज आपको यह कहता है कि कल भजन कर लेंगे या रात बड़ी है फिर भजन कर लेंगे, वह मन कल भी आपके पास ही होगा। हम नहीं जानते कि परमात्मा की क्या प्लानिंग है, पता नहीं वह कब हमें बुला लें?'' कबीर साहब कहते हैं:

कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल।।
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु।।

परमात्मा ने हमें तंदरूस्ती दी है, जवानी दी हैं, हमें इस वक्त से पूरा फायदा उठाना चाहिए। पता नहीं कब आवाज पड़ जाए और हम इस भरे बाजार को छोड़कर चले जाएं।

दरिया बह रहा था, रास्ते में फेरी दरिया के दो हिस्से कर रही थी। गुरु नानकदेव जी महाराज दरिया के पानी की हालत को देखकर अपने भजन में लिखते हैं:

नदीआ वाह विछुँनिआ मेला संजोगी राम।।

पता नहीं कि अब का बिछड़ा हुआ पानी इकट्ठा होगा या नहीं क्योंकि पानी की अलग–अलग दिशा हो गई हैं। यह इंसानी जामा परमात्मा से मिलने का मौका है अगर हम इससे बिछुड़ गए तो पता नहीं फिर हमारा मिलाप हो या न हो या हमारा जन्म किसी ऐसी जगह हो जाए कि हम भूले–भटके भी परमात्मा की तरफ न आ सकें, परमात्मा की भक्ति न कर सकें।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जो प्रेमी है जिनके दिल में परमात्मा से मिलने का शौक है, उनके लिए सन्तों का एक वचन ही काफी होता है। सन्त जो कहते हैं प्रेमी वह कर लेते हैं, बाकी हम एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं।

हमारे राजस्थान की आम कहावत है कि एक पिता अपने बच्चों को नसीहत दे रहा था कि बेटा, ये काम तुम्हारे फायदे के हैं, ये काम तुम्हारे फायदे के नहीं। वहाँ चींटिया खड्डे से बाहर आ रही थी और खड्डे के अंदर जा रही थी। बच्चों का ख्याल पिता की बात की तरफ नहीं था, उनका ध्यान चींटियों की तरफ था। पिता ने बच्चों से पूछा, ''क्यों बच्चा, कुछ बात समझ आई?'' बच्चों ने कहा यहाँ से तो अनेको ही चींटियां खड्डे में गई, अनेकों ही खड्डे से निकल गई। हमारी हालत भी उस परिवार जैसी है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

आत्मा मैली है

10,11 मई 1977 सनबोंटन, अमेरिका

एक प्रेमी:– *शुरुआत में जब मैंने सिमरन चालू किया तो मेरी तवज्जो श्वास की तरफ जाने लगी। मैंने जो कपड़े पहने हुए थे, शायद वे बहुत गर्म थे और मुझे बहुत गर्मी लगने लगी। जब तवज्जो श्वास की तरफ जाने लगी तो मुझे आवाज़ सुनाई देने लगी, मैं सिमरन छोड़कर आवाज़ सुनने लगी। जब मैं आवाज़ सुन रही थी तो मुझे जोत नज़र आने लगी, जब आवाज़ सुनते हुए जोत नज़र आने लगे तो क्या उस जोत को देखते रहना चाहिए या आवाज़ छोड़कर सिमरन करना चाहिए?*

बाबा जी :– जब हम अभ्यास पर बैठें तो उससे पहले ही हमें अपने कपड़ों के बारे में पता होना चाहिए कि क्या ये कपड़े मेरे लिए ठीक हैं, मुझे इन कपड़ों में गर्मी या सर्दी तो नहीं लगेगी? गर्मी या सर्दी लगे तो हमें भजन में बैठे हुए हिलना पड़ता है। हम जब भी अभ्यास पर बैठें, हमें अपने कपड़ों का ध्यान ज़रूर रखना चाहिए।

अगर सिमरन करते हुए जोत नज़र आती है तो आप जोत के दर्शन करें अगर 'शब्द' सुनाई देता है तो 'शब्द' सुने, यह आपकी मर्ज़ी है लेकिन आप एक वक्त पर एक ही काम कर सकते हैं। जोत को छोड़कर 'शब्द' सुने या फिर जोत को देखते रहें, 'शब्द' की तरफ तवज्जो न दें।

मैं आपको रोज़ ही बताया करता हूँ कि आप अंदर समय का अंदाज़ा लगाकर बंटवारा कर लें अगर एक घंटा बैठना है तो बाद में पंद्रह मिनट 'शब्द' सुने। आँखें खोलकर घड़ी की तरफ न देखें कि मेरा पौना घंटा हो गया है, अब मैं 'शब्द' सुनूँ। हमें अंदर से ही अंदाजा लगाकर 'शब्द'

सुन लेना चाहिए। आप जब भी आँखें खोलेंगे तो ध्यान बाहर चला जाएगा, ख्याल फ़ैल जाएगा और आप 'शब्द' को कामयाबी से सुन नहीं सकेंगे।

प्रेमी : *मेरा अभ्यास बहुत अच्छा था, मुझे महाराज जी की बहुत दया महसूस हो रही थी लेकिन मुझे सामने से इतनी ताकत आती हुई नजर आई कि मेरा शरीर हिलने लगा और मैं कांपने लगा। उसके बाद मैं सीधा नहीं बैठ पाया और पीछे की तरफ गिरने लगा। मैं बड़ी ही कोशिश से वापिस अपनी अवस्था में आया, मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या करूँ?*

बाबा जी: हम जब भी अभ्यास करते हैं तो हमें अंदर से बहुत ताकत मिलती है। वास्तव में सिमरन से हमें इतनी ताकत मिलती है कि हम उसे संभाल नहीं सकते इसलिए सिमरन पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। सिमरन से हमारी आत्मा में बर्दाश्त करने की बहुत शक्ति आ जाती है। हमें दुनिया में भी दुखों का सामना करने में मदद मिलती है और आत्मा को 'शब्द' के आगे ठहरने में भी मदद मिलती है।

यहाँ तो हम एक सूरज की तरफ भी नहीं देख सकते, आगे तो आपको पता ही है कि कितना नूर है अगर हम इस दुनिया के करोड़ों सूरज–चंद्रमाँ को इकट्ठा करें तो भी उस नूर के एक बाल का मुकाबला नहीं कर सकते। उस पर निगाह टिकानी कितनी मुश्किल होगी? इसलिए सन्त हमसे यहाँ अभ्यास करवाते हैं कि जब 'शब्द' आएगा तो आप उसकी ताकत को बर्दाश्त कर सकें।

एक बार बाबा जयमल सिंह जी के पास दो पंडित आए, उन्होंने उनसे नाम के अभ्यास के बारे में पूछा। बाबा जी ने खुश होकर उन्हें नाम दे दिया। वे पंडित दो साल बाद फिर बाबा जी से मिले तो बाबा जी ने उनसे पूछा, ''क्यों भई, अभ्यास करते हो?'' एक पंडित ने कहा कि मुझे तो उसमें कोई दिलचस्पी नहीं रही इसलिए मैंने छोड़ दिया। दूसरे ने कहा कि मैं थोड़ा बहुत करता हूँ।

एक बार बाबा जी अपनी पेंशन लेने के लिए जा रहे थे तो उन्हें रास्ते में वही दो पंडित मिले। एक ने कहा कि आप मुझ पर दया करें, मेरा शब्द खोल दें। बाबा जी ने उससे कहा, ''देख भई, **आत्मा मैली है**, यह शब्द को बर्दाश्त नहीं कर सकेगी।'' उस पंडित ने काफी हठ किया और कहने लगा, ''बेशक मैं मर भी क्यों न जाऊँ, आप मुझे थोड़ी-सी तवज्जो दें।''

बाबा जी ने उसे वहीं बिठाकर थोड़ी-सी तवज्जो दी तो वह चिल्ला उठा कि मुझसे 'शब्द' सहा नहीं जाता, आप अपनी ताक़त वापिस ले लें। बाबा जी ने उससे कहा कि अंदर से 'शब्द' का ध्यान छोड़ दे। जब उसने अंदर शब्द का ध्यान छोड़ा तो बाबा जी ने उससे पूछा कि क्या हुआ? वह कहने लगा कि मुझे ऐसे लगा जैसे करोड़ों बिजलियाँ मुझ पर टूट पड़ी हैं। इसी तरह जब तक हम अभ्यास नहीं करते तब तक हम उस 'शब्द' और ताक़त को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

महाराज सावन सिंह जी यह कहानी बताया करते थे कि एक प्रेमी डेरे में बाबा जी के पास रहता था। जब उसका अंत समय आया तो उसने महाराज सावन सिंह जी के आगे विनती की कि मेरा 'शब्द' खुल जाए। महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जी के आगे विनती की तो बाबा जी ने कहा कि उससे 'शब्द' सहन नहीं होगा लेकिन उसकी संभाल ज़रूर होगी। बीबी रूक्को पास ही बैठी थीं, उन्होंने कहा कि आप जीवों पर दया करें।

खैर, बाबा जी ने दया की और उस प्रेमी का 'शब्द' खुल गया लेकिन उससे बर्दाश्त नहीं हुआ। उसने फिर बीबी रूक्को और महाराज सावन सिंह जी से विनती की, ''बाबा जी से कहें कि उन्होंने जो वस्तु मुझ पर खोली है, उसे संभाल लें, मुझसे बर्दाश्त नहीं हो रही।'' बीबी रूक्को ने विनती की कि उससे 'शब्द' बर्दाश्त नहीं हो रहा, आप 'शब्द' बंद कर दें। तब बाबा जी बड़े खफा होकर बोले, ''क्या अब हम उसे काल के मुँह में जाने दें? अगर 'शब्द' नहीं खोलते तो आप अभाव ले आते हैं और जब

'शब्द' खोल दिया है तो बर्दाश्त नहीं कर सकते।'' 'शब्द' को झेलने के बारे में कबीर साहब कहते हैं:

चोट सहारै सबद की तासु गुरु मैं दास।

अगर कोई 'शब्द' की चोट को सहन कर ले तो मैं उसे गुरु मान लूँगा। शब्द की चोट कोई सूरमा बहादुर ही सहन कर सकता है। सन्तों के लिए किसी रूह को ऊपर खींच लेना कोई मुश्किल नहीं होता, वे जब नाम देते हैं तो उस वक़्त रूहों को ऊपर खींच सकते हैं लेकिन हमारी **आत्माएं मैली होती हैं।** वे जब उस ख़ुशी को देखती हैं तो उसे बर्दाश्त नहीं कर सकतीं, यहाँ तक कि दुनिया के काम करने लायक नहीं रह जाती और घर का काम भी नहीं कर सकती फिर लोग कहते हैं कि ये पागल हो गई हैं।

हुजूर महाराज जी एक बहुत सुन्दर मिसाल देकर समझाया करते थे कि जिस तरह रेशम का कपड़ा किसी कंटीली झाड़ी पर पड़ा हुआ है अगर हम उस कपड़े को एकदम खीचें तो वह फट जाता है किसी काम का नहीं रहता अगर हम आहिस्ता–आहिस्ता उस कपड़े को निकालें तो वह कपड़ा बच जाता है। इसी तरह हमारी आत्मा भी कौम, मज़हब, मुल्क, बच्चों, विषय–विकारों के प्यार में और शरीर के रोम–रोम में फँसी हुई है इसलिए सन्तों ने हमें सिमरन का साधन बताया है। जिस तरह हम कंटीली झाड़ी से रेशम के कपड़े को आहिस्ता–आहिस्ता निकालते हैं उसी तरह सिमरन हमारी सहायता करता है, पहले हम आहिस्ता–आहिस्ता अपनी आत्मा को दुनिया से निकालते हैं, फिर बच्चों से, फिर अपने ख्याल को शरीर से निकाल कर तीसरे तिल पर लाते हैं जिससे कोई तकलीफ नहीं होती।

सिमरन के अंदर बहुत शक्ति और ताकत होती है, सिमरन करने से इंसान के अंदर बड़ी शक्तियां पैदा हो जाती हैं लेकिन सन्त हमेशा ही अपने सेवकों को खबरदार करते हैं कि आपने दुनियावी कामों के लिए इन शक्तियों से कभी भी कोई काम नहीं लेना अगर हम सिद्ध शक्तियों

से काम लेते हैं तो हमारी आगे की तरक्की रुक जाएगी और हम कभी भी तरक्की नहीं कर पाएंगे।

महाराज सावन सिंह जी बाबा कला की मिसाल दिया करते थे, वह रिद्धि–सिद्धि से बहुत काम लेता था। एक माता पहाड़ों पर अपनी गाय चराने के लिए जाती थी, एक दिन उसकी गाय को शेर ने मार दिया। उस माता ने बाबा कला के पास आकर शिकायत की कि शेर ने मेरी गाय को मार दिया है। बाबा कला बाहर निकला और अपनी सिद्ध शक्तियों से काम लेते हुए बोला 'धूड़ु–धूड़ु'। बस उसके इतना कहने की ही देर थी कि वह शेर मर गया और गाय भागती हुई आ गई।

जब बाबा कला का अन्त समय आया तो वह बहुत दुखी हुआ। उसका भाई अच्छी कमाई वाला था, वह सन्तमत पर चलता था। उसने बाबा कला से कहा कि तुमने जो शेर को मारकर गाय को ज़िंदा किया था, उसी कर्म की वजह से तुम्हें दुख मिल रहा है। इसलिए सन्त कहते हैं कि चाहे आप पर कितना भी कष्ट आए, कुछ भी हो जाए लेकिन आप अपने अंदर से धुआं तक भी न निकलने दें कि हम कुछ हैं।

प्रेमी: *अब मुझे अभ्यास के अंदर नींद की बड़ी समस्या होती जा रही है, जब आप पहले यहां आए थे तो आपके यहाँ ठहराव के पहले कुछ दिनों तक मुझे नींद की इतनी समस्या नहीं थी। अब मैं रोज़ाना काम में ही इतना थक जाता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि मुझे बहुत नींद आ रही है। क्या मैं कुछ और कर सकता हूँ जिससे मैं कम नींद ले सकूं? क्या आप नींद कम करने के कुछ उपाय बताएँगे?*

बाबाजी: मैं आमतौर पर बताया करता हूँ अगर हम लगातार पांच–छह घंटे नींद ले लें तो जिस्म बहुत हल्का हो जाता है फिर हमें नींद की परेशानी नहीं रहनी चाहिए। हम तकरीबन आठ–दस या बारह घंटे सोने के आदि होते हैं इसलिए पहले थोड़े दिन हमें नींद की परेशानी रहती है।

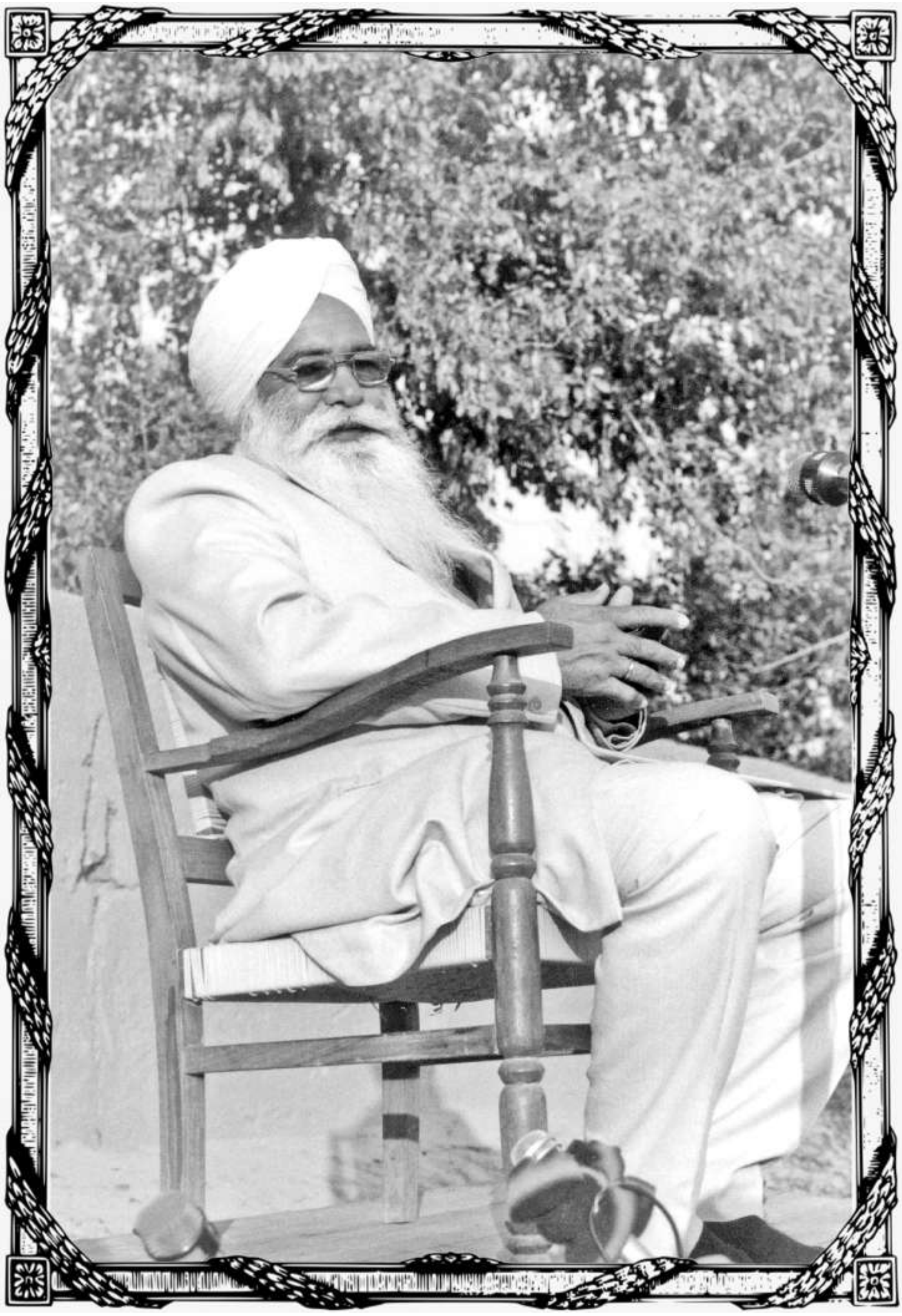

लेकिन जब हम अभ्यास कर लेते हैं फिर तक़रीबन महीने–डेढ़ महीने में नींद की समस्या पर काबू पा लेते हैं। जैसे आज हमें नींद न लेने की वजह से परेशानी होती है फिर उसी तरह हमें सोने से परेशानी हुआ करेगी। आमतौर पर जो प्रेमी जल्दी तरक्की नहीं कर पाते, उसकी यही वजह है कि हम अभ्यास में बैठे हुए सो जाते हैं।

कल मैंने बताया था कि जब यहाँ आकर अभ्यास में बैठते हैं तो कई प्रेमी शुरू के पांच–सात मिनट ही जागकर सिमरन करते हैं। उसके बाद उन्हें तब पता चलता है, जब हम सबको कहते हैं कि आंखें खोलें। उन्हें बाकी के एक घंटे का कुछ भी पता नहीं होता और आँखें खोल लेने के बाद भी जब हम बातचीत करते हैं तो वे उस दौरान भी सोए रहते हैं। वे आदमी इन दो घंटे में से तक़रीबन आधा घंटा जागते हैं और बाकी डेढ़ घंटा सोकर चले जाते हैं लेकिन वे इतना उत्साह दिखाते हैं और कहते हैं कि हम अंदर सन्तों को देखना चाहते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

आये थे सतसंग में गए नींद में सोये।
पारस में परदा रहा कस लोहा कंचन होय।

हम भजन करने के लिए आए थे लेकिन नींद में सो जाते हैं। जब हमने पारस और लोहे के बीच किसी चीज का पर्दा दे दिया और लोहा पारस के साथ लगता ही नहीं तो वह सोना कैसे बनेगा?

हुजूर कहा करते थे कि जिनकी रातें बन गई, जिन्होंने नींद जीत ली, उनका सब कुछ ही बन गया। हमें जागने की आदत नहीं होती इसलिए शुरुआत में परेशानी होती है लेकिन जब हम आदत बना लेंगे तो हमारी यह परेशानी कुछ ही दिनों में खत्म हो जाएगी। मैं हुजूर महाराज को देखता रहा हूँ,वे बहुत ही कम सोते थे। कई बार तो जब सफर करना होता था, वे उसी दौरान दो–चार घंटे कार की पिछली सीट पर ही सो जाते थे। एक बार गंगानगर में ऐसा वक्त आया कि उन्हें रात में सिर्फ दो घंटे ही सोने

का समय मिला। जब अगले दिन सुबह हम लोग श्रीकरणपुर जाने लगे तो मैं दिल से ऐसा चाहता था कि हुजूर अकेले कार में जाएँ ताकि वे पिछली सीट पर सो सकें लेकिन हुजूर नहीं माने और कहने लगे कि मैंने तुम्हारे साथ कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं इसलिए तुम मेरे साथ बैठ जाओ।

श्रीकरणपुर में किसी प्रेमी ने टी–पार्टी रखी हुई थी,जिसमें हुजूर को जाते ही शामिल होना था। उस टी–पार्टी के बाद शाम का सतसंग करना था और रात को गांव में किसी प्रेमी के घर जाना था। तक़रीबन रात को ग्यारह–साढ़े ग्यारह बजे हुजूर को चारपाई पर आराम करने का मौका मिला। आप दिल से यह ख्याल ही निकल दें कि महात्मा सारी रात सोकर गुज़ारते हैं। पहले तो दिन में उन्हें सब प्रेमियों को टाइम देना पड़ता है, उनका शरीर मशीन की तरह चलता है, हर प्रेमी के साथ बात करना, हर प्रेमी को टाइम देना और सुबह वे सबसे पहले उठते हैं।

प्रेमी: *मैं अभ्यास करना चाहती हूँ लेकिन जब मैं बहुत अच्छे और पवित्र वातावरण से अमेरिका के किसी शहर में चली जाती हूँ तो बहुत मुश्किल लगता है, एक तरह से असंभव सा लगता है। जब तक बहुत अच्छे और पवित्र वातावरण में रहती हूँ तब तक बिल्कुल ठीक रहता है, सुबह अच्छी तरह से उठा जाता है, सारा दिन अभ्यास किया जाता है और कोई परेशानी नहीं होती लेकिन जब न्यूयॉर्क, शिकागो, बोस्टन या लॉस एंजेलिस जैसे शहरों में जाती हूँ,जहाँ चौबीस घंटे आवाज़ें होती रहती है और हजारों आदमियों को देखना पड़ता है। हो सकता है कि यह सब सिर्फ मेरे लिए ही हो लेकिन ऐसे वातावरण में रहकर मैं उन्हें सिर्फ देखते–देखते ही थक जाती हूँ। वहाँ सिमरन मेरी मदद तो करता है लेकिन बड़ा मुश्किल हो जाता है।*

बाबा जी : हम अपने काम को भूल जाते हैं। हमें अपना काम याद रखना चाहिए कि हम सतसंगी हैं, हमें प्रभु से मिलना है, हमारा क्या काम

है? राजा जनक ने सुखदेव मुनि को ज्ञान देने से पहले तेल का एक कटोरा दिया और कहा कि इसे लेकर पूरे शहर का चक्कर लगाना अगर तेल नहीं गिरेगा तो तुझे नामदान मिलेगा अगर थोड़ा-सा भी तेल गिरेगा तो नामदान नहीं मिलेगा। उसके पीछे एक जल्लाद भी लगा दिया और जल्लाद से कहा, ''अगर इससे कहीं भी तेल की एक बूंद गिर जाए तो फौरन तलवार से इसका सिर कलम कर देना।'' राजा जनक ने सुखदेव मुनि का ध्यान भटकाने के लिए कई जगह मुजरे लगवाए, कई जगह सभा-सोसाइटी बनवाई कि किसी न किसी तरह इसका ध्यान भटक जाए।

एक तरफ सुखदेव मुनि को नाम का शौक था और दूसरी तरफ तलवार का डर था कि थोड़ा-सा भी तेल गिरा तो ये फौरन तलवार से मेरा सिर काट देगा और आगे मुझे नाम भी नहीं मिलेगा तो मैं सचखण्ड कैसे जाऊँगा? जब वह सारे शहर में चक्कर लगा आया तो राजा जनक ने उससे पूछा कि तूने क्या-क्या देखा? क्योंकि शहर में बहुत जगह मुजरे और तमाशे हो रहे थे। सुखदेव मुनि ने कहा, ''अगर आप मुझे तेल का कटोरा न देते और मेरे पीछे तलवार वाला न लगाते तो मैं आकर ज़रूर आपको सब-कुछ बताता लेकिन मेरी नज़र और सारी तवज्जो इसी में रही इसलिए मैंने कुछ भी नहीं देखा कि कहाँ क्या है?''

इसी तरह हर जीव के पीछे काल रूपी जल्लाद तलवार लेकर फिर रहा है। अगर हम ऐसे देखें कि हमें मारने के लिए कोई हमारे पीछे फिर रहा है और हमें सचखंड जाना है तो मेरा ख्याल है कि दुनिया में कितने भी रंग-तमाशे क्यों न हो रहे हों, हमें पता ही नहीं चलता कि दुनिया में क्या हो रहा है। क्योंकि हमारा मकसद तो हमेशा ही अपने घर पहुंचने में है। हमें हमेशा ही अपना ख्याल सिमरन में लगाए रखना चाहिए। हमें अपने काम की तरफ तवज्जो देनी चाहिए, दुनिया के काम की तरफ तवज्जो नहीं देनी चाहिए। ***

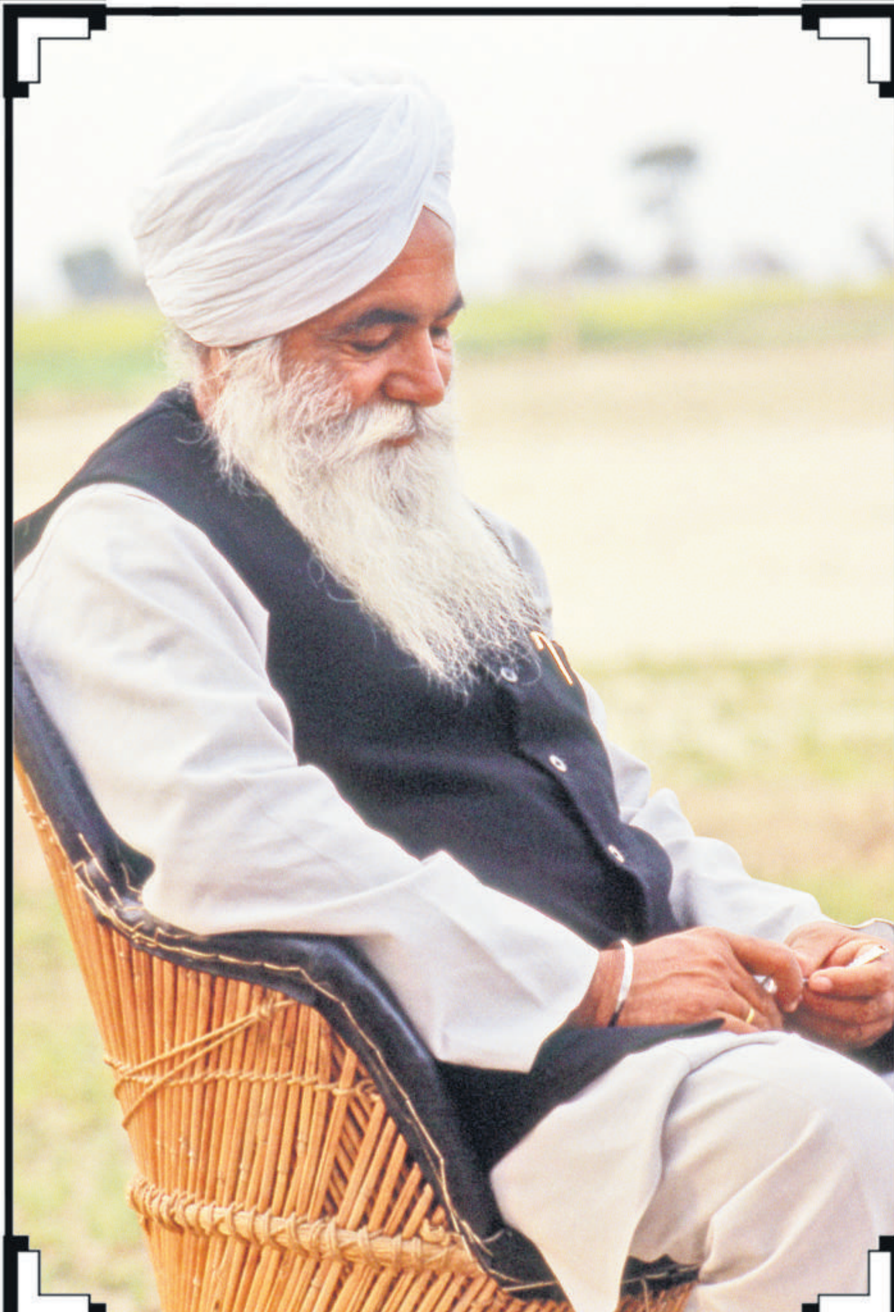

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

लाट साहब

हमें पता ही है कि हम सतसंग में क्यों आते हैं, किसलिए आते हैं। हमें हमेशा ही सोचना चाहिए कि हमारे अंदर बहुत कमियां हैं। हमारी कमियां दो किस्म के आदमी, कोई दुश्मन या सन्त ही बता सकते हैं। दुश्मन सबके सामने खड़े होकर ही कह देता है कि तेरे अंदर यह कमी है और महात्मा कहानी सुनाकर कह देते हैं कि आपके अंदर यह कमी है। हमारा यह फर्ज बनता है अगर कोई हमारी कमी बताता है तो हमें गुस्सा नहीं करना चाहिए बल्कि कमी बताने वाले के शुक्रगुजार होना चाहिए कि भाई, तूने हमारी कमी बताई। हमारा फर्ज है कि हम उस कमी को दूर करें।

हमारा मन बहुत हठीला दुश्मन है अगर कोई महात्मा हमें अपने वचनों के चाबुक लगाता ही रहे तो बेशक यह उस तरफ चल पड़े, नहीं तो बहुत मुश्किल है। यह सच्चाई है कि सन्त देने के लिए आते हैं, आगे अपने–अपने बर्तन का सवाल है। बाहरी तौर पर हमें जरूर ऐसा लगता है अगर हम अंदरूनी तौर पर समझ जाएं कि ये हमें कुछ देने के लिए आए हैं तो सारी दुनिया उनसे फायदा उठा ले। वे फायदा तो सबका ही करते हैं चाहे किसी ने उन्हें देखा है या नहीं देखा।

सन्त जब भी संसार मंडल पर आते हैं वे हर किसी का फायदा करते हैं। किसी मुल्क में जंग लग जाती है हाँलाकि उन लोगों का उस महात्मा से कोई वास्ता नहीं होता लेकिन जब वे आत्माएं उस गैबी ताकत को पुकारती हैं तो इस मंडल पर पूरे महात्मा उनका दुख भी उठा लेते हैं।

कई बार हम कुर्बानियां करते हैं और हमारे दिल में ख्याल आता है कि हम यह गुरु के लिए कर रहे हैं। गुरु का दिल दरिया की तरह होता है, गुरु पर्दापोश होते हैं, वे जल्दी किसी का पर्दा जाहिर नहीं करते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु लेते भी कुछ नहीं और छोड़ते भी कुछ नहीं।'' यह बड़ी सोच-विचार की बात है अगर हम इस बात को समझें तो वक्त साबित कर देता है किस तरह गुरु कुछ नहीं लेते।

मुझे बचपन से ही भगवान की उतनी तड़प नहीं थी जितनी गुरु की थी। मैं सोचता था कि वे कैसे आदमी हैं जो गुरु के पास बैठे होंगे, जिन्होंने गुरु को देखा होगा। मैं सिख घराने में पला था, मुझे दस गुरुओं से बहुत प्यार था। मेरे अंदर यही तड़प थी कि मैं भी गुरु को देखूं।

मैं पहले ही पंजाब की जायदाद छोड़कर रमता साधु बन गया था। मेरी माँ ने कहा था, ''बेटा किसी का दिया हुआ कपड़ा नहीं पहनना, अगर तू अपनी खोज से नहीं हटता और तेरे पास पैसे खत्म हो जाएं तो घर आकर पैसे ले जाना।'' बाबा बिशनदास ने कहा, ''तू वहाँ पर घर बना जहाँ वस्तु देने वाले ने आना है।'' मैंने वहाँ काफी सारी जमीन खरीदी। उस समय सरकार के ऐसे कानून निकले कि आप दो मुरब्बा जमीन रख सकते हैं। मैंने मारवाड़ में पाँच मुरब्बा जमीन खरीदी, वह बेच दी, खूनी चक में भी काफी जमीन थी उसमें से दो मुरब्बा रख लिया।

जब हुजूर आए तो वे मेरी जायदाद देखकर बहुत खुश हुए कि सब कुछ ठीक-ठाक है, जमीन अच्छी है। हुजूर ने मेरी जमीन को देखकर कहा कि तू इस जमीन को छोड़ दे। मेरे पास बहुत पशु थे, बहुत सामान था। हुजूर ने कहा कि ये पशु और सामान लोगों की लड़कियों को बाँट दे।

आप सोचकर देखें, आपने सारी जिंदगी जिसकी आशा लगाई हो लेकिन जब वे मिले तो ऐसा कौतुक कर दें कि इन सबको छोड़ दे, तेरा इन पशुओं और सामान के साथ कोई मतलब नहीं। यह सब कितना मुश्किल है। उस समय मन यह कहेगा कि मैंने गुरु के कहने पर यह सब किया है। यह भी एक बीमारी है।

किया कराया सब गया जब आया अहंकार।

मैंने कहा, ''अच्छा, तेरा भाणा जो तेरा हुक्म है वही होगा।'' अजीत सिंह यहाँ पास ही खड़ा है, आप इनसे पूछ सकते हैं, ये मेरे पहले के अच्छे प्रेमी थे, मैं इनके घर भी नहीं गया। मैं एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया कि तेरा मकानों से क्या मतलब। हुजूर ने कहा था, ''मैं तेरे पास आऊंगा तूने मेरे पास नहीं आना, अपना भजन करना है।'' मैंने वक्त खराब नहीं किया। अगर अब मैं यह कहूं कि उन्होंने मुझे क्या दिया तो जुबान बयान नहीं कर सकती। मेरी यह हालत है अगर मैं शाम को सारे बर्तन धोकर रख दूं तो सुबह वे सारे बर्तन भरे होते हैं, यह तो गुरु का करिश्मा है। हमारी यह हालत है अगर वे दोनों हाथों से देते हैं तो हम लेते नहीं।

मैं आमतौर पर मस्ताना जी की आँखों देखी घटना सुनाया करता हूँ कि वे एक लड़के के ऊपर आशिक हो गए। उन्होंने उस लड़के का नाम लाट साहब रख दिया। मस्ताना जी ने उस लड़के के घरवालों से कहा कि आप लाट साहब हमें दे दें, घर के लोग मुकर गए। **लाट साहब** जब चाहे मस्ताना जी से मिल सकता था। किसी आदमी ने मस्ताना जी से पूछा कि आप **लाट साहब** पर इतने आशिक क्यों हैं?

मस्ताना जी ने कहा कि इस लड़के के शरीर का थोड़ा सा डील–डोल सावन शाह पर पड़ता है। मैं यह सोचता हूँ कि इसके शरीर की कुछ झलक मेरे गुरु से मिलती है तो क्यों न मैं लोक–परलोक इस पर वार दूं, मेरे पास यही कीमती चीज थी। मैंने सोचा कि मैं बना–बनाया राम ही इसके अंदर रख दूं। कुछ दिनों बाद उस लड़के के घरवालों ने विचार किया कि मस्ताना जी सारा दिन नोट बाँटते रहते हैं, हमने गलती की क्यों न हम अपना लड़का उन्हें दे दें। वे मस्ताना जी के पास सिरसा गए जैसे पहले वे जब आते थे तो मस्ताना जी से मिल लेते थे। मस्ताना जी के दरवाजे पर एक चौकीदार बैठता था, उसने उन्हें अंदर जाने से रोका तो उन्होंने कहा कि मस्ताना जी से कहो कि **लाट साहब** मिलने के लिए आया है। जब

मस्ताना जी को बताया तो मस्ताना जी ने कहा कि यहाँ पैंतीस सौ **लाट साहब** फिरते हैं। मैंने तो उनसे एक माँस का लोथड़ा माँगा था उन्होंने वह भी नहीं दिया, मैं तो उसके अंदर बना बनाया सावन शाह टिका रहा था।

हमारा यह तजुर्बा है कि सन्त देते हैं लेकिन हम ले नहीं सकते। हम कहते हैं कि पहले पल्ले में डालो, हम उनके राज को नहीं समझते। भजन को पहला काम समझें। माँग रखकर भजन न करें कि हमें ये दें। शर्त लगाकर भजन पर न बैठें कि हमें ये दें फिर हम भजन करेंगे। वह भजन कैसा हुआ वह तो गर्ज है। जब वह वस्तु मिल जाती है तो मन और इच्छा पैदा कर लेता है। भजन का मतलब है कि हमारी कोई ख्वाहिश न हो, उनका काम देने का है, वे दें या न दें यह उनकी मर्जी है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जब बंदा बंदे की मजदूरी नहीं रखता तो क्या भगवान हमारी मजदूरी रख सकते हैं? वह बेइंसाफ नहीं। हमने सबसे पहले भजन करना है, अपनी शर्तें बाद में पैदा करनी हैं। हमारी यह हालत है कि मन हमारे अंदर ख्वाहिश पैदा करता है कि हमारा यह कारोबार पूरा हो जाए।

हम सारा दिन ऐसा ही करते रहते हैं फिर आँखें बंद करके भजन पर बैठ जाते हैं फिर जब उठते हैं तो घंटा अरदास में लगा देते हैं। मन ख्वाहिशें उठाता रहता है और उन्हें हम सतगुरु से पूरा करवाना चाहते हैं। हम गुरु की भक्ति करते हैं या मन की भक्ति करते हैं? हम मस्तक में जो कुछ लिखवाकर लाए हैं वह हमें जरूर मिलेगा। हम जो कुछ कर रहे हैं हमें उसका फल भी जरूर मिलेगा अगर हम अच्छी फसल बीज रहे हैं तो हमें ही काटनी है। हमारा पहला काम भजन–सिमरन करना है, देना उनका काम है। बुल्लेशाह ने कहा थाः

ओह प्रभ साडा सखी है असी सेवा कन्नियों सूम।

सूम उसे कहते हैं जिसके पास करोड़ों रूपये हों लेकिन वह बेचारा एक पाई भी खर्च न करता हो। हर उस्ताद एक न एक दाँव छिपाकर रख लेता है क्योंकि उसकी अंदर रसाई नहीं होती लेकिन गुरु ने हमें अपने वश में होने का पूरा मंत्र दिया है कि आप इस तरह आराधना करेंगे तो मैं आपके वश में हो जाऊंगा। इतना वश में हो जाऊंगा कि मैं दूसरी तरफ झाँकूगा भी नहीं, प्रेमी का भी यही फर्ज होता है। कबीर साहब कहते हैंः

जब तुम आवे आँख में आँख झाँप मैं लूं।
न मैं देखूं ओर को न तुझे देखन दूं।।

अगर हमारे दिल में इतना विश्वास हो तो गुरु कहाँ जाएंगे। ऐसा नहीं कि गुरु एक के अंदर प्रकट हो गए तो दूसरे के अंदर प्रकट नहीं होंगे। गुरु सर्वव्यापी हैं, वे शब्द करके हर जगह व्यापक हैं अगर उनके सारे शिष्य भी इस तरह की आराधना शुरु कर दें तो वे सबके अंदर प्रकट हो सकते हैं।

सजण मेरा साईयां हब कही दा मित्त।
सभे जानण आपणा काहे न ढाहे चित्त।।

उनका सबके साथ प्यार होता है। उनका हर प्रेमी यह कहता है कि गुरु का मेरे साथ जितना प्यार है उतना किसी और के साथ नहीं। हमें भी चाहिए कि सच्चे दिल से आराधना करें। हुजूर कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन–अभ्यास में बैठ जाएं, तब तक तन को खुराक न दें जब तक आत्मा को खुराक नहीं देते। तन की खुराक अन्न है आत्मा की खुराक भजन–अभ्यास है। यह बेचारी जन्म–जन्मांतर की भूखी विलाप कर रही है।''

अपनी आत्मा की आवाज सुनें, सबने भजन–सिमरन करना है। आपस में प्यार बनाकर रखना है अगर आपका प्यार गुरु से होगा तो आपको देखकर अड़ोस–पड़ोस के लोग भी सुधर जाएंगे। लोगों को कम से कम यह तो पता होगा कि यह सन्तों का सेवक है।

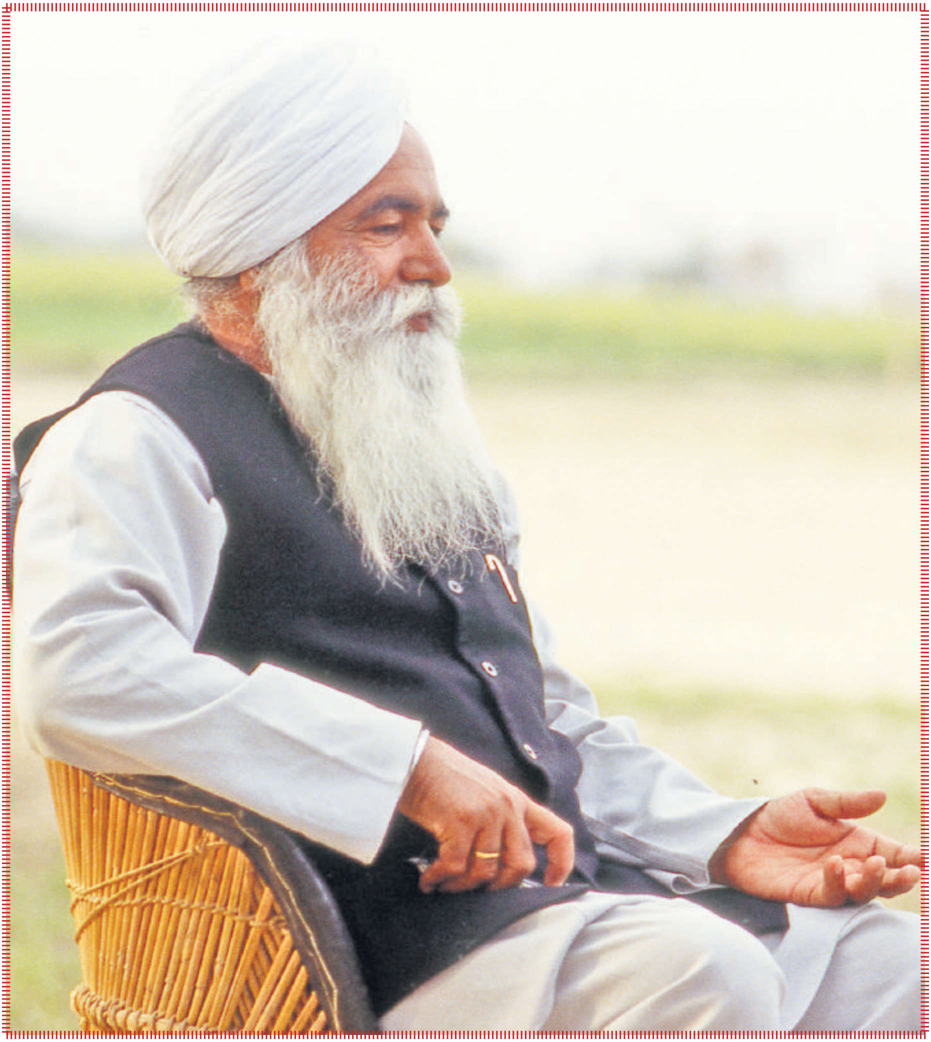

लोगों को भी हम पर यकीन होना चाहिए कि ये सन्तों के सेवक हैं ये झूठ नहीं बोलते, इनका व्यवहार सच्चा है। सच्चे व्यवहार में शुरु में थोड़ी तकलीफ होती है लेकिन बाद में जब उसका मूल्य पड़ता है तो वह बहुत ऊँचा होता है। सबने दिल लगाकर सिमरन करना है।

***

भजन-अभ्यास

22 जून1992

अपने गुरुदेव सावन-कृपाल के आगे नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद का मौका दिया है, अपनी भक्ति में बैठने का मौका दिया है। किसी पेड़ का फल खाने से पता चलता है कि यह फल कितना मीठा है, इसका क्या जायका है इसके क्या फायदे हैं। इसी तरह जिन्होंने भक्ति की है, भक्ति का फल चखा है उन्हें ही पता है कि भक्ति का क्या फायदा है। हम मूल्य देकर यह धन प्राप्त नहीं कर सकते, खेतों में उगा नहीं सकते, जोर जबरदस्ती से छीन नहीं सकते सिर्फ नम्रता और आजजी के जरिए ही मालिक के प्यारे भक्तों से प्राप्त कर सकते हैं।

जीव कितना भी समझदार या पढ़ा-लिखा क्यों न हो फिर भी वह बेसहारा और बेआसरा है, पिछले कर्म भोगने के लिए हर जीव मजबूर है। सन्त हमें स्वतंत्र कर देते हैं कि हम अगला जीवन जैसा भी चाहे बना सकते हैं। चाहे हम मालिक के दरबार में पहुँचें या चौरासी में जाएं।

हम इंसानी जामें का फायदा सन्तों के बताए हुए पाँच पवित्र नाम प्राप्त करके, उनका सिमरन करके नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे जाकर ही बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, इसका फायदा उठा सकते हैं।

हमारा फर्ज बनता है कि हम लगातार सिमरन करें दुनिया के ख्याल न सोचें। हम प्रभु की याद के लिए बैठे हैं उस प्रभु के बारे में ही सोचें, आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरु करें।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम:

1. 03, 04 व 05 अक्टूबर
2. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
3. 05, 06 व 07 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899

इंसानी जामें का फायदा हम एक ही तरीके से उठा सकते हैं कि गुरु हमें जो बताते हैं हमने उस रास्ते पर चलना है। भजन-सिमरन करके गुरु को अपने ऊपर खुश करना ही सबसे बड़ी चीज है। हम इस ढ़ग को अपनाकर गुरु को अपने ऊपर मेहरबान कर सकते हैं।